

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 3, रोजर विलियम्स और रोड आइलैंड में धार्मिक विविधता

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने शिक्षण में हैं। यह रोजर विलियम्स और रोड आइलैंड में धार्मिक विविधता पर सत्र 3 है।

इस व्याख्यान में, शुक्रवार को, मैं उस चीज़ से थोड़ा सा पढ़ना पसंद करता हूँ जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं और कभी-कभी थोड़ी सी भक्तिपूर्ण प्रकृति भी।

तो आज, शुक्रवार को, मैं एक पत्र का एक अंश पढ़ना चाहता हूँ। यह एक आदमी का अपनी पत्नी को लिखा गया पत्र है। मैं पत्र की परिस्थितियों को एक मिनट के लिए छोड़ दूँगा, और फिर हम इस बारे में बात करेंगे कि उसने यह पत्र क्यों लिखा।

यह विलियम लेड्रा नामक एक व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। यह आपको कुछ खास नहीं लग रहा। हम पाठ्यक्रम में उनके बारे में बात नहीं करते, लेकिन यहाँ वे अपनी पत्नी को पत्र लिख रहे हैं।

सुबह के तारे के मधुर प्रभाव, मेरे निर्दोष निवास में बाढ़ की तरह, मुझे पवित्रता की सुंदरता में ईश्वर के आनंद से भर दिया है, कि मेरी आत्मा ऐसी है मानो वह मिट्टी के तम्बू में नहीं रहती। हे मेरे प्रिय, मैं जहाज की खिड़की पर कबूतर की तरह प्रतीक्षा कर रहा हूँ, और मैं उस पहर में स्थिर खड़ा हूँ, जिसमें मेरा दिल आनन्दित था, ताकि मैं प्रेम और जीवन में तुमसे कुछ शब्द बोल सकूँ, जो वादे की आत्मा से सीलबंद हों, ताकि उसका स्वाद तुम्हारे जीवन के लिए जीवन का स्वाद हो, और मेरी निर्दोष मृत्यु की गवाही हो। विलियम लेड्रा बोस्टन कॉमन पर फाँसी दिए जाने वाले अंतिम केकर थे, और यह वह पत्र है जो उन्होंने अपनी पत्नी को उस सुबह लिखा था जब वे उन्हें बोस्टन कॉमन में फाँसी देने के लिए ले गए थे।

तो, याद रखें, बोस्टन कॉमन में चार केकरों को फाँसी दी गई थी, लेकिन सभी मसीह कौन है और उनके जीवन में परमेश्वर ने क्या किया है, यह समझने के लिए जाने को तैयार थे। तो, यह बोस्टन कॉमन ले जाए जाने से ठीक पहले उनकी पत्नी को लिखा गया एक पत्र है। ठीक है, हम ठीक हैं, मुझे लगता है।

हम व्याख्यान संख्या दो, रोजर विलियम्स और रोड आइलैंड में धार्मिक विविधता पर हैं। इसलिए, व्याख्यानों के संदर्भ में हम उस जगह पर हैं जहाँ हमें होना चाहिए। पहली बात जिसके बारे में हमने बात की वह रोजर विलियम्स था।

और मैंने दूसरे दिन यह उल्लेख करने की कोशिश की कि अगर मुझे इस पाठ्यक्रम में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक को चुनने के लिए कहा जाए, तो मुझे उसे सूची में रखना होगा। वह वास्तव में महत्वपूर्ण है और रोड आइलैंड और प्रोविडेंस में स्थापित है, एक कॉलोनी जो पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता और पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता के लिए समर्पित है। और यह एक व्यापक अमेरिकी संस्कृति में भी लागू होगा।

लेकिन वह वास्तव में महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि हम यहीं तक सीमित हैं। हमने उनकी अपनी तीर्थयात्रा के बारे में बात की, है न? वह एंग्लिकन से प्यूरिटन, बैपटिस्ट और साधक बन गए, और वे अपने जीवन में एक साधक बन गए।

तो यह रोजर विलियम्स की तीर्थयात्रा है। मुझे लगता है कि हमने शायद इसका उल्लेख किया है। मुझे नहीं लगता कि हम वास्तव में रोड आइलैंड गए थे।

तो, मेरा मतलब यह नहीं है कि हम सचमुच रोड आइलैंड नहीं जा पाए। तो, चलिए रोड आइलैंड चलते हैं और रोड आइलैंड के बारे में कुछ बातें कहते हैं। ओह, मुझे अभी इसकी ज़रूरत नहीं है।

ठीक है। अब, रोड आइलैंड के बारे में पहली बात यह है कि उन्होंने इस कॉलोनी की स्थापना की। पहली बात जिस पर हम ध्यान देना चाहते हैं वह यह है कि रोजर विलियम्स खुद केकर्स को नापसंद करते थे।

उन्हें उनका धर्मशास्त्र पसंद नहीं था। हम केकर धर्मशास्त्र के बारे में बहुत बात करेंगे। उन्हें उनका धर्मशास्त्र पसंद नहीं था।

वह उनके धार्मिक निर्माणों से वास्तव में परेशान था, लेकिन उसने उन्हें पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता के कारण अपने उपनिवेश में स्वागत किया। इसलिए, वह अपने उपनिवेश में पूर्ण स्वतंत्रता के अपने सिद्धांत के प्रति वफादार रहने वाला था, भले ही वह केकर्स को नापसंद करता था और वह जो सिखाता था उसे नापसंद करता था। वह जो करने वाला नहीं था वह लोगों को उनके धार्मिक विश्वासों के लिए दंडित करने के लिए राज्य के हाथ का उपयोग करना था।

उन्होंने यूरोप में ऐसा बहुत कुछ देखा था। उन्होंने बोस्टन में भी ऐसा बहुत कुछ देखा था। इसलिए, वह लोगों को उनके विश्वास के लिए दंडित करने के लिए राज्य के हाथ का उपयोग नहीं करने वाले थे।

ऐसा नहीं होने वाला था। वह चर्च और राज्य के पूर्ण पृथक्करण में विश्वास करते थे। और चर्च के संदर्भ में, वह लोगों को धार्मिक होने या न होने की पूर्ण स्वतंत्रता में विश्वास करते थे।

तो, यह रोजर विलियम्स के लिए सिर्फ सहनशीलता का मामला नहीं था। यह पूर्ण स्वतंत्रता का मामला था। ठीक है, अब मैं रोड आइलैंड के बारे में एक और बात कहना चाहता हूँ क्योंकि हम रोड आइलैंड को धार्मिक स्वतंत्रता के इस मॉडल के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं, बहुत सारी धार्मिक असहिष्णुता के बीच, लेकिन क्योंकि हम रोड आइलैंड को अपने मॉडल के रूप में

इस्तेमाल कर रहे हैं, तो चलिए 18वीं सदी और 1700 के दशक, 1776 की ओर बढ़ते हैं, उदाहरण के लिए।

तो, चलिए संस्थापक पिताओं की ओर बढ़ते हैं। और हम उनके बारे में एक अलग व्याख्यान में बात करेंगे, लेकिन हमें अभी इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मैं बस एक छोटी सी तुलना और विरोधाभास करना चाहता हूँ।

रोजर विलियम्स ने धार्मिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता और चर्च और राज्य के पृथक्करण की अपनी समझ को पूरी तरह से बाइबल पर आधारित किया। उनका मानना था कि यह धर्मग्रंथ की शिक्षाएँ थीं। जब आप 1700, 1776 और आगे की ओर बढ़ते हैं, तो अक्सर जिन सिद्धांतों की अपील की जाती थी, वे ज्ञानोदय के सिद्धांत थे।

वे दार्शनिक सिद्धांत थे, हमेशा नहीं और जरूरी नहीं कि बाइबिल के सिद्धांत हों। इसलिए, हमने 1630 के दशक में रोड आइलैंड में रोजर विलियम्स के साथ कुछ ऐसा घटित होते देखा है जो 750 साल बाद घटित होगा। तो आप अपने दिमाग में जो करना चाहते हैं वह धार्मिक स्वतंत्रता की उस तरह की समझ की तुलना और विरोधाभास करना है, धार्मिक स्वतंत्रता की नींव क्या है, धार्मिक स्वतंत्रता और चर्च और राज्य के पृथक्करण की नींव क्या है।

इसलिए, जब आप तुलना और विरोधाभास करते हैं तो आपको उन चीजों के बारे में सोचना चाहिए। और हमने यहां रोड आइलैंड में रोजर विलियम्स के साथ जो स्थापित किया है वह वास्तव में अद्वितीय है। अब तक, यह अद्वितीय है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

ठीक है, चलो सी पर चलते हैं। चलो जॉर्ज फॉक्स पर चलते हैं। मैं जॉर्ज फॉक्स के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ क्योंकि वह क्लेकर्स के साथ जो हम बात करने जा रहे हैं उसके लिए महत्वपूर्ण है। तो, मैं जॉर्ज फॉक्स के बारे में थोड़ी जीवनी संबंधी बातें करूँगा।

जॉर्ज फॉक्स, आपको उनके बारे में पता है। ठीक है, जॉर्ज फॉक्स इंग्लैंड में पैदा हुए थे और एंग्लिकन परंपरा में पले-बढ़े थे, लेकिन जीवन के शुरुआती दिनों में भी जॉर्ज फॉक्स इस बात से बहुत परेशान थे कि चर्च पर राज्य का नियंत्रण था। वह चर्च-राज्य के रिश्ते और चर्च पर राज्य के नियंत्रण को लेकर बहुत परेशान थे क्योंकि उन्हें नहीं लगता था कि यह न्यू टेस्टामेंट चर्च है।

वह जो अनुभव कर रहा था, उसके अनुसार उसे यह न्यू टेस्टामेंट चर्च नहीं लगा। और इसलिए यह बात उसे परेशान करती थी। इसलिए, जॉर्ज फॉक्स, एक तरह से, दो तरह से निराश था।

तो मैं उनके अपने दो तरीकों का जिक्र करूँगा, मुझे नहीं पता, निराशा, तीर्थयात्रा की शुरुआत, और फिर देखना कि वे इससे कैसे बाहर निकलते हैं। तो, नंबर एक, जब वे बाइबल पढ़ते हैं या जब वे शुरुआती चर्च के इतिहास के बारे में पढ़ते हैं, तो वे आत्मा से भरे लोगों, पवित्र आत्मा से भरे लोगों के बारे में पढ़ते हैं। प्रेरितों के काम की किताब एक अच्छा उदाहरण है, और इसी तरह, लेकिन लोग पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं।

लेकिन उसने 17वीं सदी में इंग्लैंड में चर्च के जीवन में उस ऑपरेटिव को नहीं देखा, और उसने अपने जीवन में भी उस ऑपरेटिव को नहीं देखा। इसलिए, वह सवाल करने लगता है, जो उसके लिए निराशाजनक है। अगर चर्च का यही मतलब है, तो वह कहाँ है जहाँ मैं रहता था, और वह मेरे अपने जीवन में कहाँ है? तो यह एक बात थी।

ठीक है, दूसरी बात यह है कि उसने बहुत से लोगों से सलाह ली, बहुत से सलाहकारों से, दोस्तों, सलाहकारों और इसी तरह के कई सलाहकारों से। उसने बहुत से लोगों से सलाह ली और सोचा कि शायद वह इन लोगों से अपनी कुंठाओं के बारे में बात कर सके। लेकिन उसने पाया कि उनमें से कुछ उसके करीबी दोस्त भी हो सकते हैं, लेकिन उसने पाया कि उसके साथ बातचीत करने पर, वह अपने दोस्तों से धार्मिक रूप से अलग था।

वे समझ नहीं पाए कि वह धर्मशास्त्र के माध्यम से क्या सोचने की कोशिश कर रहा था। और इसलिए वहाँ भी एक वास्तविक निराशा थी। तो, सबसे बड़ी निराशा यह है कि मैं इन सभी आत्मा से भरे लोगों के बारे में पढ़ रहा हूँ। मैं ऐसा क्यों नहीं हूँ, और चर्च ऐसा क्यों नहीं है? और दूसरी बात, मेरे पास कुछ विचार हैं जिनके बारे में मैं दोस्तों से बात करना चाहता हूँ, लेकिन मेरे और उनके बीच एक खाई सी दिखाई देती है।

तो, जॉर्ज फॉक्स के साथ जो होता है वह यह है कि उसे ईश्वर से एक परिवर्तन का अनुभव प्राप्त होता है, और फिर वह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए खुद ही आगे निकल जाता है। तो, जॉर्ज फॉक्स को लगा कि ईश्वर ने उसके जीवन को एक अनोखे तरीके से आगे बढ़ाया है। और जॉर्ज फॉक्स ने अपने जीवन में एक बहुत ही गहरा धार्मिक अनुभव महसूस किया।

और वह इसके बारे में मसीह के आंतरिक प्रकाश के रूप में बात करते थे। मसीह मेरे दिल में है; मेरे दिल में अब मसीह का प्रकाश है, और अब मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि मैं बाहर जाना चाहता हूँ, और मैं मसीह के उस आंतरिक प्रकाश का प्रचार करना चाहता हूँ, जो स्पष्ट रूप से अनुभव पर आधारित है। इसलिए, जॉर्ज फॉक्स ने बाहर जाकर ऐसा करने का फैसला किया, और उन्होंने 1648 में अपनी तरह की तीर्थयात्रा शुरू की।

तो, यह उसकी तारीख है, और मैंने आज रात उसकी तारीख बताई, 1624. 1648 वह समय है जब वह अपनी तरह की आध्यात्मिक तीर्थयात्रा शुरू करता है, और वह बाहर जाता है और मसीह के आंतरिक प्रकाश के बारे में उपदेश देने वाला एक उपदेशक बनने का फैसला करता है। इसके लिए कोई संप्रदायिक नाम नहीं है।

अभी तक उसका कोई संप्रदाय नहीं है। अभी तक उसका कोई आंदोलन नहीं है। अभी तक उसके आसपास लोग नहीं हैं।

लेकिन 1648 में उन्होंने प्रचार करना शुरू कर दिया। उनके प्रचार का तरीका यह है कि वे मसीह के आंतरिक प्रकाश के बारे में हर जगह प्रचार करेंगे, चाहे वह सड़कों पर हो, कस्बों में हो या गांवों में। कभी-कभी, चर्च उन्हें सुबह की पूजा सेवा के बाद अपने चर्चों में बोलने की अनुमति देते थे, और कभी-कभी, वे उन्हें उन लोगों से बात करने की अनुमति देते थे जो मसीह के इस आंतरिक प्रकाश में रुचि रखते थे।

और इसलिए जो होता है, वह यह है कि उसे मसीह के इस आंतरिक प्रकाश का अनुसरण करना शुरू हो जाता है। अब, वह एक जोड़े से मिलता है जो केकर इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण हैं, और उनके नाम हैं जज और मार्गरेट फेल। यह उस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है जिसे हम केकर आंदोलन के रूप में जानते हैं।

जज फेल, यही उनकी उपाधि है। वे बैरिस्टर थे। मुझे लगता है कि उनका नाम थॉमस था, लेकिन वे अपने काम की उपाधि से जाने जाते थे, एक परामर्शदाता, एक बैरिस्टर, एक वकील।

इसलिए, उन्हें अक्सर साहित्य में जज फेल और मार्गरेट फेल के नाम से जाना जाता है। और वह जज और मार्गरेट फेल से मिलते हैं। वह उनसे स्वार्थमोर हॉल नामक जगह पर मिलते हैं, जहाँ जज और मार्गरेट फेल नामक ये लोग अमीर हैं।

और इसलिए, उनके पास एक बहुत बड़ा महल और बहुत सारी संपत्ति, बहुत सारे नौकर-चाकर और बहुत कुछ था। संक्षेप में, जज और मार्गरेट फेल को मसीह के इस आंतरिक प्रकाश के बारे में उससे विश्वास हो गया। इसलिए, उसने उनके दिलों में मसीह के आंतरिक प्रकाश के बारे में विश्वास जगाया।

और यह वास्तव में केकर्स नामक एक आंदोलन के संगठनात्मक संगठन की शुरुआत है। इसलिए, स्वार्थमोर हॉल केकर्स का मुख्यालय बन गया। और उस तरह के मुख्यालय से, बहुत से लोग जो मसीह के इस आंतरिक प्रकाश के बारे में आश्वस्त हैं, पूरे इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स में जाते हैं और मसीह के इस आंतरिक प्रकाश के बारे में प्रचार करना शुरू करते हैं।

मैं आपको एक आँकड़ा दे सकता हूँ, लेकिन मैं रोजर विलियम्स के साथ अपनी बात खत्म करूँगा, और फिर हम आगे बढ़ेंगे। मैं उनके साथ अपनी बात खत्म करूँगा, और फिर हम जॉर्ज फॉक्स के साथ आगे बढ़ेंगे, और हम डी, केकर्स के उदय पर आगे बढ़ेंगे। लेकिन मैं उनकी कहानी जल्दी खत्म कर दूँगा। संख्याएँ तेज़ी से बढ़ती हैं, जिसे हम बस एक पल में देखेंगे।

और फिर जज फेल की मृत्यु हो जाती है, और वह मार्गरेट फेल से शादी कर लेता है। इसलिए, मार्गरेट फेल उसकी पत्नी बन जाती है। और अगर आप में से कोई भी पेपर करने में रुचि रखता है, तो आप जानते हैं, हमारे पास चार पेपर हैं जो आप कर सकते हैं।

पेपर का एक विषय अमेरिकी ईसाई धर्म में महिलाएँ हैं। और मार्गरेट फेल अमेरिकी ईसाई धर्म में केकर आंदोलन की एक बहुत ही महत्वपूर्ण महिला नेता थीं। कई बार उन्हें बहुत कष्ट सहना पड़ा।

वह बहुत ही विशेषाधिकार प्राप्त पृष्ठभूमि से आई थी, लेकिन क्योंकि वह एक केकर थी, उसे अक्सर जेल में रहना पड़ता था और इसी तरह की अन्य चीजें भी, इसलिए वह जीवन के उस हिस्से को भी जानती थी। इसलिए जॉर्ज फॉक्स कितना महत्वपूर्ण है। वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति है जिसे जानना चाहिए।

तो, हम उनके बारे में बात करने के लिए थोड़ा समय लेते हैं। लेकिन चलिए डी, केकर्स के उदय के बारे में बात करते हैं। आइए देखें कि यह आंदोलन कैसे आगे बढ़ा।

यदि आप पृष्ठ 12 पर अपनी रूपरेखा का अनुसरण कर रहे हैं, तो केकर्स के उदय को देखें। ठीक है, यदि हम इस आंदोलन की शुरुआत के लिए लगभग 1600 के दशक के मध्य का उपयोग करते हैं, यदि हम इसे आंदोलन की शुरुआत के लिए एक तरह के बेंचमार्क के रूप में उपयोग करते हैं, तो उन्होंने वास्तव में 1652 में फेल्स को आश्वस्त किया, और क्योंकि वे केकरवाद को स्थापित करने में मदद करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। यदि हम इसे बेंचमार्क के रूप में उपयोग करते हैं, तो बस एक मिनट के लिए 1700 तक आगे बढ़ें।

तो लगभग 50 साल आगे, 1700 तक। 1700 तक, पूरे इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स में, यह इंग्लैंड में ही केंद्रित था, लेकिन 1700 तक, केकर्स की संख्या 100,000 हो गई थी। यह बहुत ही असाधारण वृद्धि है।

तो, जाहिर है, केकर का संदेश आकर्षक है। जीवन में केकर संदेश के बारे में कुछ ऐसा है जो लोगों को बहुत आकर्षित करता है और कुछ ऐसा है जो लोगों को अपने धार्मिक जीवन से खुश नहीं करता है, जो एंग्लिकनवाद में एक अधिक मानक धार्मिक जीवन है। तो, 1700 तक लगभग 100,000 केकर थे।

यह बहुत उल्लेखनीय है। ठीक है, केकर्स के इस उदय के बारे में एक और बात। यह बहुत दिलचस्प है कि केकर्स ने अपील की; केकर के संदेश में सभी प्रकार के लोगों के लिए अपील थी।

उदाहरण के लिए, फेल्स जैसे बहुत अमीर लोग हैं, और विलियम पेन नाम का एक आदमी जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे, लेकिन बहुत अमीर लोग, अमीर, प्रभावशाली, उच्च वर्ग के लोग थे जो केकर बन गए, लेकिन केकरवाद ने सबसे निचले वर्ग, नौकर वर्ग और मध्यम वर्ग के सभी लोगों को भी आकर्षित किया। अब, वर्ग भेद हम उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के बारे में सोचते हैं; 17वीं शताब्दी और 18वीं शताब्दी में इंग्लैंड में कुछ तरलता थी, लेकिन मूल रूप से, इसने सभी वर्गों को आकर्षित किया। इसलिए, विलियम पेन जैसा कोई व्यक्ति केकर बन सकता है, और घर में एक निम्न नौकर जैसा कोई व्यक्ति भी केकर बन सकता है।

ठीक है, अब एक और बात जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए, वह है इन लोगों की उपाधि, जिन्हें केकर कहा जाता है। खैर, यह बहुत दिलचस्प है। उन्हें यह उपाधि इसलिए दी गई क्योंकि उनकी शुरुआती सेवाओं में, आप केकर्स के बारे में इस तरह नहीं सोचते।

मुझे ऐसा नहीं लगता, लेकिन जब मैं आपसे पूछूंगा तो हम पता लगा लेंगे। हालाँकि, उनकी शुरुआती सेवाओं में, केकर्स के शुरुआती आंदोलन में, उनकी धार्मिक सेवाएँ बहुत शोरगुल वाली होती थीं। बहुत सारा नाच-गाना होता था, और वे बहुत शोरगुल वाली सेवाएँ होती थीं। और इसलिए, जब कुछ केकर्स को जज के सामने लाया गया, तो जज ने कहा, आप लोग केकर हैं क्योंकि आप अपनी धार्मिक सेवा के दौरान काँपते हैं, और इंग्लैंड में हर कोई जानता है कि आप काँपते हैं, और हर कोई सोचता है कि यह वास्तव में निंदनीय है।

इसलिए, उन्हें केकर नाम से जोड़ दिया गया, और यह नाम उन्हें वास्तव में अपमानजनक तरीके से दिया गया था, लेकिन उन्होंने इसे सम्मान के प्रतीक के रूप में लिया। इसलिए, उन्होंने कहा, ठीक है, हमें खुद को केकर कहने में कोई आपत्ति नहीं है। हमें इससे कोई आपत्ति नहीं है।

मूल रूप से उन्होंने हमें केकर इसलिए नहीं कहा था, लेकिन हमें खुद को केकर कहने में कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन वे अन्य शब्दों को पसंद करते थे, और जिस शब्द को वे सबसे अधिक पसंद करते थे, मेरा मतलब है, मेरे पास बहुत सारे शब्द हैं, प्रकाश के बच्चे, सत्य के प्रकाशक, ईश्वर के लोग, और केकर कहे जाने वाले तिरस्कार, इत्यादि। लेकिन एक शब्द था जिसे वे पसंद करते थे, और वह था मित्र शब्द।

हम दोस्तों का समाज हैं, और यह यीशु की इस उक्ति से आता है, तुम मेरे मित्र हो यदि तुम वही करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ। तो, उन्होंने कहा, हम वही हैं। हम मित्र हैं, और हम मित्रों का समाज हैं।

क्या आप में से कोई केकर मीटिंग में गया है? क्या आप संयोग से किसी केकर मीटिंग में गए हैं? क्या यह एक बहुत ही शांत मीटिंग थी? आप केकर मीटिंग के बारे में क्या सोचते हैं? आप यही सोचते हैं। ठीक है। मैं इसे दूसरे तरीके से कहता हूँ।

जब आप केकर पूजा के बारे में सोचते हैं, तो आज आप क्या सोचते हैं? मौन। आप मौन के बारे में सोचते हैं। मुझे आपके अनुभव के बारे में नहीं पता, लेकिन फिर भी, कुछ केकर चर्चों में, पुरुष और महिलाएँ अलग-अलग बैठते हैं, लेकिन केकर धर्म में कोई नियुक्त व्यक्ति नहीं है, इसलिए हर आम आदमी एक तरह से पादरी है।

तो, कोई भी व्यक्ति खड़ा होकर परमेश्वर की ओर से एक वचन दे सकता है, जो पवित्र आत्मा द्वारा प्रकाशित है। कोई भी व्यक्ति खड़ा होकर एक वचन कह सकता है, लेकिन बैठक में अक्सर सत्राटा रहता है। मुझे नहीं पता कि आप जिस बैठक में गए थे, वह बहुत ही शांत बैठक थी या नहीं, जब तक कि कोई खड़ा होकर बोल न दे।

एक घंटे का मौन, जो उन्होंने प्रभु से सुना। इसमें पुरुष और महिला दोनों ही शामिल थे, इसलिए इसमें पुरुष और महिला दोनों ही शामिल थे। इसलिए, एक घंटे का मौन, और फिर आप खड़े होकर बोलते हैं।

मेरा मतलब है, तो आज केकर मीटिंग के बारे में आप यही जानते हैं। कुछ केकर समूहों ने ज़्यादा इंजीलवादी भूमिका अपना ली है; वे एक इंजीलवादी चर्च की तरह दिखते हैं। अगर आप अंदर जाते हैं, तो वहाँ गाना, कुछ भजन, कुछ उपदेश, और इसी तरह की अन्य चीज़ें होंगी।

लेकिन उस तरह की मौन पूजा, और फिर कुछ लोगों का आत्मा के नेतृत्व में बोलना, यही आप जानते हैं। खैर, यह मूल रूप से केकर्स के बारे में सच नहीं था। यह केकर्स का शांत रहने वाला हिस्सा है क्योंकि उन्हें लगा कि वे शुरुआती बैठकें थोड़ी बहुत शोरगुल वाली थीं, और इसी तरह की अन्य बातें।

और फिर उन्हें जज से यह चेतावनी मिली: आपको केकर कहा जाता है। इसलिए वे इस नाम से जाने जाना नहीं चाहते थे। इसलिए, इस तरह से समझौता हुआ और आज आप केकर्स के बारे में यही जानते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

कभी-कभी, केकर रैंकों के भीतर एक तरह की कट्टरता होती है, और यह केकर्स पर बुरा प्रभाव डालती है। इसलिए, मैं सिर्फ एक व्यक्ति का जिक्र करने जा रहा हूँ, एक केकर व्यक्ति जो थोड़ा कट्टर था, और उसका नाम था जेम्स नेलर। तो यहाँ जेम्स नेलर की तारीखें हैं।

ठीक है, तो जेम्स नेलर। जेम्स नेलर का जीवन थोड़ा कठिन था। जेम्स नेलर एक बार ब्रिस्टल में प्रचार कर रहे थे।

अब, वह लंदन में केकर्स के प्रमुख थे, इसलिए यह केकर इतिहास में एक महत्वपूर्ण नाम है। लेकिन जेम्स नेलर ब्रिस्टल में थे, और वह ब्रिस्टल में एक केकर समुदाय में थे। और उन्होंने फैसला किया कि वह लोगों के दिलों में मसीह के प्रवेश के बारे में प्रचार करना चाहते हैं क्योंकि मसीह का यह आंतरिक प्रकाश बहुत महत्वपूर्ण है।

तो, उन्होंने ब्रिस्टल में जो किया, वह यह था कि उन्होंने यीशु के यरूशलेम में विजयी प्रवेश का पुनः मंचन किया। उन्होंने सोचा कि ब्रिस्टल के लिए इस तरह का पुनः मंचन देखना अच्छी बात होगी। और इसलिए, उन्होंने गधे पर सवार होकर यीशु के यरूशलेम में विजयी प्रवेश का पुनः मंचन किया और इस तरह केकर्स को बदनाम कर दिया।

और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। अब बेचारे जेम्स, मेरा मतलब है बेचारे जेम्स नेलर, जब उसे गिरफ्तार करके जेल में डाला गया, तो उन्होंने उसके साथ दो ऐसी हरकतें कीं, जो आपको फिर कभी ऐसा करने से हतोत्साहित करेंगी। उन्होंने ईशनिंदा करने वाले के लिए उसके माथे पर मधुमक्खी का निशान लगा दिया।

अब यह अच्छी बात नहीं है, आप जानते हैं, यह अच्छी बात नहीं हो सकती। इसलिए, ईशनिंदा करने के कारण उसके माथे पर मधुमक्खी का डंक लगा दिया गया। और फिर उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने उसकी जीभ में गर्म लोहे से छेद कर दिया ताकि उसकी जीभ में छेद होने के कारण वह वास्तव में स्पष्ट रूप से बोल न सके, यह केकर भाषा न बोल सके।

और फिर उन्होंने उसे जेल में डाल दिया। तो, जेम्स नेलर ने वास्तव में केकर के कारण कष्ट झेले, इसमें कोई संदेह नहीं है। अब, जेम्स नेलर के साथ इस कहानी का एक तरह से अंत हो गया है।

जब जेम्स नेलर जेल से बाहर आया, तो उसे अपने किए पर पछतावा हुआ। उसे लगा कि उसने केकर समुदाय को बदनाम कर दिया है। इसलिए उसे अपने जीवन में किए गए कामों पर थोड़ा पछतावा हुआ।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ऐसी घटनाएँ होती हैं: केकरवाद फिर उसी चीज़ पर आ जाता है जिसके बारे में हमने बात की थी, और केकरवाद का शांत होना इनमें से कुछ घटनाओं के बाद होता है। तो, नेलर प्रकरण ने केकर्स को 18वीं सदी में वास्तव में अत्यधिक सतर्क बना दिया,

इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, अब, केकर्स के उदय के तहत, मैं केकर्स के कुछ प्रमुख विचार देना चाहता हूँ, कुछ विचार जो एक साथ आए और जिनके लिए वे जाने गए।

तो, हम इसे यहाँ करेंगे। केकरों के अमेरिका आने से पहले केकरों के उदय के दौरान यहाँ ऐसा करना स्वाभाविक है। तो यहाँ कुछ बुनियादी विचार हैं। ये किसी क्रम में नहीं हैं, सबसे महत्वपूर्ण विचार से लेकर सबसे कम महत्वपूर्ण विचार तक।

ये सिर्फ़ कुछ विचार हैं कि केकर क्या मानते थे, क्या सिखाते थे और क्या सोचते थे कि वे महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, पहला जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, और वह है मसीह के आंतरिक प्रकाश की घोषणा करना। सुसमाचार का केंद्रीय सत्य मसीह है, और इसका केंद्रीय अनुभव यह है कि हर व्यक्ति को मसीह का आंतरिक प्रकाश मिल सकता है।

हर एक आस्तिक के पास मसीह का वह आंतरिक प्रकाश हो सकता है। और इसलिए यह उनके लिए एक केंद्रीय सत्य, एक केंद्रीय प्रकार का संदेश, एक केंद्रीय प्रकार की घोषणा बन जाता है। तो यह केकर्स का एक विचार है।

केकर्स का दूसरा विचार यह है कि वे सुसमाचार संदेश की सादगी, मसीह के आंतरिक प्रकाश और सुसमाचार संदेश की सादगी को पसंद करते हैं। वे न्याय, दुनिया के अंत या मसीह के दूसरे आगमन के सट्टा संदेश की तुलना में सुसमाचार संदेश की सादगी को पसंद करते हैं। उन्हें लगता है कि सुसमाचार का यह पक्ष बहुत अधिक अटकलें लगाने वाला था।

केकर जीवन और धर्मशास्त्र के लिए अटकलों के बजाय सादगी ही मुख्य शब्द बन गया है। और 17वीं शताब्दी में, यीशु के दूसरे आगमन के बारे में बहुत सारी दिलचस्प अटकलें थीं, कि यह कहाँ होने वाला था, यह कब होने वाला था, इत्यादि। तो यह नंबर दो है।

ठीक है, नंबर तीन, कि आप इस बात से हैरान नहीं होंगे, बेशक। वे रोजर विलियम्स की तरह, पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक स्वतंत्रता में विश्वास करते थे। न केवल धार्मिक सहिष्णुता बल्कि धार्मिक स्वतंत्रता।

लोगों को अपनी पसंद के अनुसार पूजा करने की आज़ादी होनी चाहिए। अगर वे चाहें तो गैर-धार्मिक होने के लिए भी उन्हें आज़ादी होनी चाहिए। अगर वे चाहें तो नास्तिक होने के लिए भी उन्हें आज़ादी होनी चाहिए।

लेकिन धार्मिक स्वतंत्रता पूर्ण होनी चाहिए। राज्य द्वारा लोगों पर धर्म कभी नहीं थोपा जाना चाहिए। इसलिए, धार्मिक सहिष्णुता नहीं, बल्कि पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता होनी चाहिए।

यह केकर्स के लिए महत्वपूर्ण था। केकर्स के लिए नंबर चार, बेशक, केकर शांतिवादी थे। उन्होंने सेना में किसी भी तरह की भागीदारी को अस्वीकार कर दिया।

तो, वे शांतिवादी थे। और आप आज भी केकर्स के बारे में थोड़ा-बहुत जानते होंगे। तो, पाँचवाँ कारण यह है कि केकर्स उनमें से एक थे, और हमें इसका श्रेय उन्हें देना होगा।

लेकिन केकर्स गुलामी के खिलाफ थे, दोनों इंग्लैंड में। जब हम अमेरिका आएंगे, तो हम इस पर बाद में एक लंबा व्याख्यान देंगे। लेकिन केकर्स गुलामी के खिलाफ थे।

वास्तव में, दुनिया में सबसे पहला गुलामी विरोधी समूह केकर्स द्वारा स्थापित किया गया था। इसलिए केकर्स ने जहाँ भी गुलामी पाई, उसके खिलाफ खड़े हुए। और मेरे पास इसका एक अच्छा उदाहरण है।

यह एक और महत्वपूर्ण केकर नाम है। उनका नाम जॉन वूलमैन है। जॉन वूलमैन के बारे में संक्षेप में बताऊँ तो जॉन वूलमैन न्यू जर्सी के केकर थे।

और उन्होंने मसीह के प्रकाश और अन्य बातों के बारे में केकर सत्य का प्रचार किया। लेकिन वे न्यू जर्सी में केकरों की अंतरात्मा की तरह भी थे। और क्योंकि कुछ केकर गुलाम रखने लगे थे, जॉन वूलमैन इसके बिल्कुल खिलाफ थे।

और इसलिए वूलमैन एक गुलामी विरोधी योद्धा थे, पहले अपने लोगों के बीच, केकर्स के बीच, लेकिन फिर पूरे अमेरिका में। वैसे भी, वह एक बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे। इसलिए, उन्हें यह पता लगाना होगा कि वह अपनी इस गुलामी विरोधी भावना और विश्वास को कैसे व्यक्त करेंगे।

वह ऐसा कैसे करेगा? इसलिए, उसने तय किया कि वह ऐसा करेगा, अगर मैं हमेशा इसका प्रचार नहीं कर सकता और इसे स्पष्ट रूप से नहीं सिखा सकता, तो मैं इसे अपने कार्यों से करूँगा। और इसलिए, जब उसे लोगों के घरों में रात के खाने के लिए आमंत्रित किया जाता था, तो वह खुशी-खुशी जाता था और खाना खाता था, और दास इन घरों में सभी को खाना परोसते थे। और भोजन के अंत में, वह दासों को एक साथ बुलाता था, और वह उन्हें उनकी सेवा के लिए भुगतान करता था।

यहाँ एक बात पर ध्यान देना ज़रूरी है कि इन लोगों को गुलाम नहीं बनाया जाना चाहिए। उन्होंने हमारी अच्छी सेवा की है, और वे अपने श्रम के लिए भुगतान पाने के हकदार हैं। इसलिए, उन्होंने इस तरह के गुलामी-विरोधी संदेश को फैलाने के लिए इस तरह की तकनीकों का इस्तेमाल किया, जिसे उन्होंने इतनी दृढ़ता से अपनाया कि कई केकर भी ऐसा ही करने लगे।

केकर्स के बारे में एक और बात यह है कि ये केकर्स के बारे में सिर्फ़ कुछ विचार हैं, लेकिन केकर्स मिशनरी काम में शामिल थे। अमेरिका आए कुछ केकर्स मिशनरी के तौर पर यहां आए थे, लेकिन फिर अमेरिका में केकर्स मूल अमेरिकियों के मिशनरी थे, यहां तक कि रोड आइलैंड से भी शुरुआत की, क्योंकि रोड आइलैंड में कई मूल अमेरिकी भारतीय जनजातियां थीं। अमेरिका में केकर्स ने मूल अमेरिकियों और भारतीयों तक पहुंचना शुरू कर दिया, इसलिए वे भी वही थे।

और फिर, अंत में, हम पहले ही इसका उल्लेख कर चुके हैं, लेकिन उनकी पूजा सेवाओं की सादगी ही वह चीज है जिसके लिए वे जाने जाते हैं। तो, पूजा सेवाओं की सादगी। इसलिए जब आप इंग्लैंड में 17वीं और 18वीं सदी के एंग्लिकनवाद के साथ केकर्स के संबंध के बारे में सोचते

हैं, तो इसकी पूजा पद्धति और उन सेवाओं की सभी पूजा पद्धतियों के साथ, केकर्स इसके बिल्कुल विपरीत हैं।

उनकी सेवाएँ बहुत ही सरल सेवाएँ हैं। अब, इंग्लैंड में प्यूरिटन और एंग्लिकन, अमेरिका में प्यूरिटन, केकर पूजा के बारे में जो बातें उन्हें बहुत परेशान करती थीं, उनमें से एक यह थी कि, शायद दो चीजें थीं, शायद तीन हों, लेकिन कुछ चीजें हैं। हालाँकि, यहाँ एक बात जो दिमाग में आती है वह यह है कि केकर संस्कारों के संदर्भ में अभ्यास नहीं कर रहे थे।

इसलिए, केकर संस्कारों का पालन नहीं करते थे और न ही करते हैं। इसलिए, ये चीजें जो प्रोटेस्टेंट के धार्मिक जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण थीं, बपतिस्मा और प्रभु भोज, केकरों को लगा कि ये आध्यात्मिक वास्तविकताएँ थीं और उन्हें पूजा सेवाओं में अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं थी। प्यूरिटन इस बात से विशेष रूप से नाराज थे, कि उन्होंने प्रभु भोज में बपतिस्मा का अभ्यास नहीं किया।

तो, कुछ प्रकार की धार्मिक प्रथाएँ थीं जो निश्चित रूप से समस्याग्रस्त थीं। लेकिन उन प्रकार की चीजों, उन प्रकार के विचारों से आपको यह पता चलता है कि केकर कौन थे, वे क्या मानते थे, उनके धर्मशास्त्र की सादगी और उनके जीवन की सादगी, जो आपको यह एहसास दिलाती है कि वे कौन थे। मुझे यहाँ बस कुछ मिनट के लिए रुकना है।

हम यहाँ कुछ समय से चर्चा कर रहे हैं। हमने रोड आइलैंड, फिर जॉर्ज फॉक्स, फिर केकर्स के उदय के बारे में बात की, इससे पहले कि हम उन्हें अमेरिका में लाते। क्या आपके पास इसके बारे में कोई सवाल है? यह एक अच्छा सवाल है।

नहीं, इसके कई अन्य कारण भी थे, और जब हम उनमें से कुछ पर पहुँचेंगे तो हम उन कारणों पर चर्चा करेंगे। मैंने इस व्याख्यान का एक छोटा सा हिस्सा धार्मिक कारणों पर लिखा है कि क्यों प्यूरिटन केकर्स के खिलाफ़ थे। तो यह सिर्फ़ एक कारण था जो मेरे दिमाग में आया जब मैं व्याख्यान दे रहा था, लेकिन कुछ धार्मिक कारण थे जो प्यूरिटन के लिए वास्तविक समस्याएँ पैदा करते थे। और इसलिए, जब हम प्यूरिटन को अमेरिका आते हुए देखेंगे, तो हम पता लगाएँगे कि इन धार्मिक कारणों से प्यूरिटन ने उन्हें क्यों फाँसी देना शुरू किया।

हाँ। हाँ, ठीक है। हम उन्हें अब अमेरिका लाएँगे और देखेंगे कि जब उन्होंने इसे अमेरिका में आयात करने की कोशिश शुरू की तो क्या हुआ।

लेकिन अब तक, हम मूल रूप से इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन मुख्य रूप से इंग्लैंड ही वह जगह थी जहाँ उनकी ताकत थी। केकर्स के बारे में कुछ और? रोड आइलैंड के बारे में कुछ? क्योंकि हमने रोड आइलैंड के बारे में रुककर नहीं पूछा। रोड आइलैंड के बारे में कुछ? क्या जॉर्ज फॉक्स के बारे में या केकर्स के बारे में कुछ है? हाँ।

ठीक है। खैर, उसके पास कुछ वास्तविक समस्याएँ थीं। एक समस्या जो उसके पास थी वह एक तरह की व्यक्तिगत समस्या भी थी, लेकिन उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक खोली।

वह आरंभिक चर्च को खोलता है। वह इन आत्मा से भरे लोगों के बारे में ये महान कहानियाँ पाता है और कैसे परमेश्वर ने उनके माध्यम से काम किया। उसे ऐसा नहीं लगा कि उसे ऐसा अनुभव हुआ था, लेकिन उसने एंग्लिकनवाद के आराधना अनुभवों में भी ऐसा नहीं देखा, जिसे वह इंग्लैंड में जानता था।

तो, वह बस यह नहीं देख पाया। तो, यह एक व्यक्तिगत समस्या है और चर्च के साथ एक समस्या है। आपने जिस दूसरी समस्या का उल्लेख किया, वह यह थी कि, फिर से, ... ठीक है।

ठीक है। ठीक है। एक और समस्या जो उसके सामने थी, वह यह थी कि, बेशक, वह इन सलाहकारों के पास गया जो ज्यादातर एंग्लिकन लोग थे, और उसने पाया कि उनमें धार्मिक मतभेद थे, लेकिन वह इन मतभेदों के माध्यम से काम नहीं कर सका।

तो, वह अपने जीवन में एक ऐसे स्थान पर पहुँच जाता है। एक बार जब वह खुद अपने जीवन में पवित्र आत्मा के द्वारा काम कर लेता है और वह मसीह के आंतरिक प्रकाश में विश्वास करता है, तो वह अपने जीवन में एक ऐसे स्थान पर पहुँच जाता है जहाँ वह कहता है, मैं स्थापित चर्च में इसके माध्यम से काम नहीं कर सकता। स्थापित चर्च इसे नहीं समझता है।

इसके अलावा, स्थापित चर्च राज्य द्वारा नियंत्रित है। यह राज्य ही है जो चर्च को नियंत्रित कर रहा है। मैं ऐसा नहीं चाहता।

मैं आज़ाद होना चाहता हूँ। इसलिए वह अपनी समझ के अनुसार सुसमाचार का प्रचार करने के लिए स्वतंत्रता और स्वतंत्रता के साथ आगे बढ़ता है। हाँ।

ईसाई धर्म के इतिहास के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति। और फिर हम केकर्स को यहाँ अमेरिका लाएँगे और देखेंगे कि यहाँ उनका क्या प्रभाव था। ठीक है।

सही है। उन्होंने कोई पदानुक्रम विकसित नहीं किया, और केकरवाद के भीतर अभी भी कोई तकनीकी पदानुक्रम नहीं है। प्रत्येक केकर चर्च और प्रत्येक केकर सभा स्थल अपने आप में स्वायत्त है।

उनके पास सुसमाचार के नियुक्त मंत्री नहीं थे। उन्होंने सभी विश्वासियों को पुरोहिताई की जिम्मेदारी इतनी हद तक ले ली कि मुझे लगता है कि यह बहुत ज़्यादा है, जिसमें सुसमाचार का प्रचार करना, सुसमाचार की शिक्षा देना और इसी तरह के अन्य काम शामिल थे, जिसमें मसीह का ज्ञान होना शामिल था।

और इसलिए, मैं खड़ा होकर कुछ भी कह सकता हूँ। तो, यह बहुत ही असंरचित, गैर-पदानुक्रमिक है, और उस क्षेत्र के एंग्लिकन चर्च से बहुत अलग है जहाँ यह बड़ा हुआ। हाँ।

और यह आज भी केकरवाद के लिए सच होगा। क्या आपको पता है कि केकर कॉलेज के बारे में कौन-सा नाम दिमाग में आएगा? कौन-सा? जॉर्ज फॉक्स। जॉर्ज फॉक्स यूनिवर्सिटी।

क्या आपने जॉर्ज फॉक्स के बारे में सुना है? हाँ। मुझे लगता है कि कुछ और भी होंगे। शायद।

वह क्या है? गिलफोर्ड। मैं उससे परिचित नहीं हूँ। वह केकर पृष्ठभूमि है, है न? ठीक है।

ठीक है। बहुत रोचक है। कुछ अन्य हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता।

मैं जॉर्ज फॉक्स को जानता हूँ, लेकिन मैं स्वार्थमोर कहना चाहता हूँ, लेकिन मुझे इस बारे में पक्का पता नहीं है। मैं स्वार्थमोर कहना चाहता हूँ, लेकिन मुझे पूरी तरह से पक्का पता नहीं है। इसलिए, हम इसे टेप से काट देंगे।

हम पता लगाएंगे। हम गूगल पर खोजेंगे। अन्य प्रश्न यहाँ हैं।

ठीक है। चलो, मैं उनसे पहले ही उन्हें अमेरिका ले आता हूँ। 10 10 सेकंड का ब्रेक क्योंकि आज शुक्रवार है।

आप शुक्रवार को 10 सेकंड के हकदार हैं, और फिर हम उन्हें अमेरिका ले आएंगे। हम बाद में ऐसा करेंगे। अभी नहीं, लेकिन हम बाद में ऐसा करेंगे।

अरे, टेड, मैं पूछना भूल गया। क्या आप इन ब्रेक के दौरान इसे बंद कर देते हैं? नहीं करते। ठीक है।

आप मेरे ब्रेक को संपादित कर सकते हैं। हम पता लगा लेंगे। ठीक है।

आपका दिल धन्य हो। 10 सेकंड। बस इतना ही काफी है।

शुक्रवार को आप अच्छी तरह से आराम कर रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि आपका सप्ताहांत शानदार रहेगा। बस शुक्र मनाइए कि आप वाशिंगटन, डीसी में नहीं रहते हैं, क्योंकि इस सप्ताहांत वहां लगभग दो फीट बर्फ पड़ने वाली है।

वाशिंगटन में दो, ढाई फीट बर्फ गिरी है। हमारे लिए ऐसा नहीं है। ठीक है।

चलो केकर्स को अमेरिका ले आते हैं। चलो केकर्स को यहाँ ले आते हैं। ठीक है।

सबसे पहले, 1656। यानी 1656 में बोस्टन में जहाज पर पहली दो महिला केकर उतरीं। जहाज कोई मायने नहीं रखता।

इसे स्वैलो नाम दिया गया। वे जहाज से बोस्टन पहुँचते हैं। मुझे लगता है कि वे यहाँ मिशनरी के तौर पर हैं।

मुझे लगता है कि वे केकर आंदोलन का प्रचार करने आए थे। 1656. अब जब वे आए तो एक समस्या थी, और वह यह कि बोस्टन में प्यूरिटन नेताओं ने उन्हें जहाज से उतरने नहीं दिया।

जब जहाज वापस इंग्लैंड गया, तो दोनों महिलाएँ उसी जहाज पर सवार होकर घर वापस जा रही थीं। उन्हें बोस्टन आने की अनुमति नहीं थी। हम इनमें से कुछ धार्मिक कारणों को बस एक मिनट में देखेंगे।

इसलिए, उन्हें जहाज पर ही रखा गया और वे चले गए। तो, ठीक है। अब, आखिरकार, केकर बोस्टन में उतरने में सक्षम हैं, और शायद मुझे संदेह है कि उनमें से कुछ बोस्टन में अन्य समूहों के साथ आए थे और रडार स्क्रीन के नीचे थोड़ा सा।

लेकिन वे बोस्टन में उतरने में सफल रहे। इसलिए, अंततः, बोस्टन में एक छोटा सा केकर समुदाय होना शुरू हो गया। अब, समस्या यह है कि केकर बोस्टन में प्यूरिटन विशिष्टता के लिए एक वास्तविक चुनौती हैं।

प्यूरिटन्स का बोस्टन पर कब्ज़ा था, और वे बोस्टन में प्यूरिटन की विशिष्टता के लिए एक वास्तविक चुनौती थे। इसलिए, उन्होंने केवल एक ही काम किया, वह था बोस्टन प्यूरिटन्स, और उन्होंने बोस्टन कॉमन पर केकर्स को फाँसी देने का फैसला किया। तो, हम पहले ही इसका उल्लेख कर चुके हैं।

हमने आज एक केकर की छोटी सी भक्ति पढ़ी, वह आखिरी केकर था जिसे बोस्टन कॉमन में फाँसी दी गई थी। ठीक है। अब, क्या हो रहा है? वे क्या सोच रहे हैं? मुझे लगता है कि हमने पहले ही पाठ्यक्रम में इसका उल्लेख किया है, लेकिन हमें वास्तव में यहाँ इस पर चर्चा करने की आवश्यकता है।

जब प्यूरिटन बोस्टन कॉमन पर लोगों को फाँसी लगाते हैं तो वे क्या सोचते हैं? खैर, वे जो सोचते हैं, वे 17वीं सदी के संदर्भ में सोचते हैं। 17वीं सदी के संदर्भ में, विधर्म से ज़्यादा सामाजिक व्यवस्था को कोई भी चीज़ बाधित नहीं करती। विधर्म सामाजिक व्यवस्था को बाधित करना है।

और हम सामाजिक व्यवस्था की एकजुटता को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। इसलिए, अगर हमें ऐसा करने के लिए बोस्टन कॉमन पर लोगों को फाँसी देनी पड़े, तो ऐसा ही करें क्योंकि यह सामाजिक व्यवस्था है।

आज हम इसे आम भलाई कहते हैं। यह एक ऐसा मुहावरा है जिससे हम परिचित हैं, है न? सामाजिक व्यवस्था, आम भलाई, हम इसे बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। और इसलिए, उन्हें फाँसी दी जाती है, सिर्फ इसलिए नहीं कि वे कुछ खास बातों पर विश्वास करते हैं, बल्कि उन्हें सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए फाँसी दी जाती है।

इसलिए, मुझे पता है कि 21वीं सदी में हमारे लिए उन शब्दों में सोचना और उनके बारे में सोचना मुश्किल है। और हम वैसे भी विधर्म के बारे में बात भी नहीं करते। इसलिए, हम हर दिन इसके साथ जीते हैं।

हम इसे पहचान नहीं पाते। इसलिए मैं जानता हूँ कि 21वीं सदी में, उन शब्दों में सोचना मुश्किल है, लेकिन आपको 17वीं सदी में वापस जाना होगा और समझना होगा कि प्यूरिटन सामाजिक

व्यवस्था और आम भलाई के संदर्भ में क्या सोच रहे थे। अब, वे उम्मीद कर रहे थे, बेशक, कि इससे केकर्स पर लगाम लगेगी।

एक बार जब लोगों ने बोस्टन कॉमन पर केकरों को फाँसी पर लटकते देखा, तो उन्हें उम्मीद थी कि लोग कहेंगे, ओह, यह मेरे लिए नहीं है। मुझे खेद है। ऐसा कभी नहीं हुआ।

मेरा एक दोस्त 17वीं सदी में इंग्लैंड में जेबकतरों को फाँसी पर लटकाने की कहानी सुनाता था। यह बहुत कठिन है। मुझे लगता है कि लोगों की जेबकतरों को फाँसी पर लटकाना बहुत कठिन है, लेकिन वे जेबकतरों को फाँसी पर लटकाते थे।

लेकिन मज़ाक यह था कि, और ये सारी भीड़ इकट्ठा होती थी, वैसे, यह बोस्टन कॉमन में भी सच था। मुझे यह कहते हुए खेद है कि यह एक सार्वजनिक कार्यक्रम था। इसलिए, जब किसी को फाँसी दी जा रही थी, तो सभी लोग बाहर आ गए, पहली रात की तरह।

जनता फाँसी देखने के लिए बाहर आती है। जेबकतरों को फाँसी देने के साथ मज़ाक यह था कि जब जेबकतरों को फाँसी दी जा रही थी, तो भीड़ में जेबकतरे थे जो पैदल चलने वाले लोगों की जेबें काट रहे थे, जेबकतरों को फाँसी दी जा रही थी। तो, क्या यह कारगर रहा? क्या केकरों को फाँसी देने से सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में मदद मिली? और इसका उत्तर है नहीं, क्योंकि बोस्टन में भी केकरवाद का विकास हुआ, बोस्टन कॉमन पर चार लोगों को फाँसी दिए जाने के बाद भी।

तो, बोस्टन कॉमन में इन केकर्स के साथ कुछ हो रहा है। लेकिन ठीक है, अब हम कुछ धार्मिक कारण बताना चाहते हैं कि क्यों प्यूरिटन केकर्स से इतने नाखुश थे। हमने केकर्स के बारे में कुछ सामान्य बातें बताई हैं, लेकिन अब हम कुछ धार्मिक कारण बताना चाहते हैं कि क्यों प्यूरिटन ने सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए केकर्स को फाँसी पर लटका दिया।

तो ठीक है, फिर से, किसी भी आवश्यक, सबसे महत्वपूर्ण, कम महत्वपूर्ण में नहीं, लेकिन ठीक है, यहाँ कुछ हैं। ठीक है, नंबर एक, केकर्स ने बाइबल को एक खुली किताब की तरह देखा। आप बाइबल में ईश्वर और मसीह और पवित्र आत्मा के बारे में अधिक से अधिक चीजें सीख रहे हैं, और विशेष रूप से, आप सीख रहे हैं कि मसीह आंतरिक प्रकाश है।

और प्यूरिटन लोग बाइबल को उससे भी ज़्यादा सीमित नज़रिए से देखते थे। वे इस केकर किस्म के अनुभवात्मक व्याख्याशास्त्र के काम करने से घबराते थे। उन्होंने ऐनी हचिंसन के मामले में ऐसा देखा था।

वे इस बात से और उसके विरोधीवाद से घबराए हुए थे। इसलिए, वे केकर्स द्वारा बाइबल के साथ किए गए व्यवहार से घबराए हुए थे। और इसलिए इससे उन्हें समस्याएँ हुईं।

और, बेशक, यह प्यूरिटन के लिए धार्मिक होगा। दूसरी बात, बेशक, हमने दूसरे दिन उल्लेख किया कि प्यूरिटन पूर्वनियति में विश्वास करते थे। वे चुनाव में विश्वास करते थे।

कुछ लोगों को बचाने के लिए चुना गया था। कुछ लोगों को शापित होने के लिए चुना गया था। और बेशक, केकर्स के लिए, यह एक अभिशाप है, पूर्वनियति का सिद्धांत, क्योंकि केकर्स को लगा कि मसीह का प्रकाश किसी भी व्यक्ति के दिल में आ सकता है।

कोई भी व्यक्ति मसीह के आंतरिक प्रकाश का अनुभव कर सकता है, न कि केवल कोई भी व्यक्ति जो पूर्वनिर्धारित है। वे पूर्वनियति में विश्वास नहीं करते थे। तीसरी बात जिसका हमने उल्लेख किया है वह चर्च की आराधना से संबंधित है।

केकर पूजा बहुत सरल थी। बेशक, केकर पूजा में कोई पूजा-पद्धति नहीं थी, और कोई निर्धारित मंत्रालय या संस्कारों का पालन नहीं था। खैर, यह बात प्यूरिटन को परेशान करती थी।

अब, प्यूरिटन के पास कोई पूजा-पद्धति नहीं थी, इसलिए वे एंग्लिकन पूजा-पद्धति से दूर हो गए। लेकिन उनके पास एक नियुक्त मंत्रालय था। याद रखें, यह व्यवसाय, व्यवसाय की धारणा से जुड़ा हुआ है।

और बेशक, उन्होंने संस्कारों का पालन किया क्योंकि संस्कार बाइबिल से हैं। इसलिए प्यूरिटन इस तरह की सादगी से बहुत परेशान हैं। और यह, बेशक, उनके लिए धार्मिक है।

धर्मशास्त्र के संदर्भ में एक और बात यह है कि उन्हें लगा कि केकर्स अनुभव पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देते हैं। प्यूरिटन इस बात से घबराए हुए थे। अगर आप अनुभव पर इतना ज़ोर देते हैं, तो यह आपको कहाँ ले जाएगा? अनुभव आते हैं और चले जाते हैं।

आपको ईश्वर के निश्चित वचन पर भरोसा करने की आवश्यकता है, जिसे हम अपने दिमाग के इस्तेमाल से समझ सकते हैं। इसलिए, वे केकर्स के इस तरह के अनुभवात्मक पहलू से बहुत घबराए हुए थे। अंततः, यह प्यूरिटन और केकर्स के बीच एक धार्मिक तनाव बन गया।

केकर खुद को मिशनरी मानते थे। हम पहले ही बता चुके हैं। लोगों के अमेरिका आने का कारण यह था कि केकर एक तरह से मिशनरी उत्साह से बाहर थे।

और प्यूरिटन जो केकर्स को पसंद नहीं करते थे, उन्हें वास्तव में यह पसंद नहीं था। उन्हें केकर्स का जोश पसंद नहीं था, लेकिन उन्हें वह धर्मशास्त्र भी पसंद नहीं था जिसने उस जोश को प्रेरित किया। धर्मशास्त्र कहता है कि हर व्यक्ति के पास मसीह का आंतरिक प्रकाश हो सकता है, इसलिए हमें हर व्यक्ति तक आंतरिक प्रकाश के इस संदेश को पहुँचाने की ज़रूरत है।

इसलिए, उन्होंने ऐसा नहीं किया; उन्हें मिशनरी उत्साह नापसंद था, लेकिन उन्हें मिशनरी उत्साह का कारण शायद और भी ज़्यादा नापसंद था। इसलिए, केकर्स, इसीलिए उन्होंने बोस्टन कॉमन में चार केकर्स को फांसी पर लटका दिया, और इसीलिए उन्होंने केकर्स को दबाना जारी रखा, और इसीलिए केकर्स आखिरकार रोड आइलैंड की ओर चले गए। तो यह हमें एफ की ओर ले जाता है, मुझे खेद है, यह हमें इस ओर ले जाता है, ओह नहीं, हम अभी भी ई में हैं, हम अभी भी ई में हैं, केकर्स अमेरिका आते हैं।

तो इससे पहले कि हम बैपटिस्ट के बारे में बात करें, ठीक है, केकर अमेरिका आते हैं, लेकिन आइए उन्हें रोड आइलैंड ले चलते हैं। रोड आइलैंड केकरों के लिए शरणस्थली बन गया।

रोड आइलैंड केकर्स का गढ़ बन गया। क्या केकर्स को समझा गया? हाँ। कि वे बहुत हद तक, मान लीजिए, वास्तव में, आत्मा की आँखों से आने वाले स्वतंत्र लोग थे? हाँ, ठीक है, ठीक है।

और क्योंकि वे इतने स्वतंत्र थे, वे सेवकाई के इस क्रम में थे। सही, सही, सही, सही। और उन्होंने इसे बिल्कुल भी बाइबल के अनुसार नहीं देखा।

बाइबल उनके अधिकार का आधार थी। वे इसे बाइबल से बिल्कुल भी नहीं मानते थे। वे इसे केवल अनुभवजन्य मानते थे।

और फिर वे इस बात से नाराज़ हो गए कि अगर आप खुद को धार्मिक संप्रदाय के रूप में स्थापित करने जा रहे हैं, तो आपके मंत्री कहाँ हैं? आप बपतिस्मा क्यों नहीं करवा रहे हैं? आप रविवार को प्रभु भोज क्यों नहीं करवा रहे हैं? वे केकर्स के काम करने के तरीके से नाराज़ थे। और सबसे बढ़कर, विधर्म सामाजिक व्यवस्था के लिए एक चुनौती है। इसलिए, विधर्म से बहुत सख्ती से निपटा जाना चाहिए।

इसलिए केकर्स को फांसी की सज़ा दी गई। हाँ, वे इसके लिए कई तरह के वाक्यांशों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन जब यीशु ने कहा, मैं दुनिया की रोशनी हूँ, तो उन्होंने इसका मतलब यह निकाला कि वह दुनिया के विश्वासियों की भी रोशनी होना चाहिए, इत्यादि।

लेकिन केकर्स के लिए, कौन यह ज्ञान प्रदान करता है कि मसीह का प्रकाश आपके अंदर है? यह पवित्र आत्मा है जो ऐसा करता है। केकर्स त्रिमूर्तिवादी थे, इसलिए वे देववादियों की तरह नहीं थे जो यूनिटेरियन थे। वे त्रिमूर्तिवादी लोग थे।

लेकिन वे पवित्र आत्मा की सेवकाई के माध्यम से मसीह के इस प्रकाश पर जोर देते हैं। यही विश्वासी का जीवन है। केकर्स के लिए यह विश्वासी का रूपान्तरण करने वाला जीवन है।

अधिक सत्य होगा। उन्हें उनके संदेश की सरलता, पवित्र आत्मा की सेवकाई के माध्यम से मसीह के इस आंतरिक प्रकाश से मापा जाता है। यही संदेश की सरलता है जो उनके लिए महत्वपूर्ण है।

इसलिए, आज यह सच होगा कि केकर्स के पास अधिक परिभाषित धार्मिक स्थिति हो सकती है। निश्चित रूप से, जॉर्ज फॉक्स कॉलेज शायद अपने समुदाय के भीतर उस तरह के धर्मशास्त्र को दर्शाता है। लेकिन जिस समय की हम बात कर रहे हैं, हम अभी भी बहुत सरल के बारे में बात कर रहे हैं, और फिर आप शहर में एक समाज बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, केकर्स रोड आइलैंड में आते हैं। वे एक समाज बनाते हैं। उन्होंने अपने लिए एक छोटी सी इमारत बनाई, और वे रोड आइलैंड में पूजा करने के लिए एक साथ आए।

लेकिन यह बहुत सरल है। वे रोड आइलैंड आते हैं, और वे रोड आइलैंड में बहुत स्वतंत्र महसूस करते हैं। ऐसा नहीं है कि बोस्टन के प्यूरिटन रोड आइलैंड आए थे।

मैं यहां कुछ बातें बताना चाहता हूं। 1672, अमेरिका में केकर इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तारीख 1672. 1672, जॉर्ज फॉक्स रोड आइलैंड आता है।

जॉर्ज के लिए यह काफी लंबी यात्रा थी। हालांकि, जॉर्ज फॉक्स रोड आइलैंड इसलिए आए क्योंकि रोड आइलैंड अमेरिका में केकर्स का केंद्र है। इसलिए, वे केकर्स से मिलने के लिए रोड आइलैंड आए और एक लेखक ने कहा कि जब वे रोड आइलैंड आए तो उन्होंने पूरे न्यू इंग्लैंड में केकर्स को एक नई जिंदगी दी।

तो, जॉर्ज फॉक्स आ रहे हैं, मुझे नहीं पता, किस लिए? अमेरिका में केकर्स को मजबूत करना और उनकी समझ को मजबूत करना कि वे कौन हैं और वे क्या हैं, बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। ठीक है, अब, हम कल्पना कर सकते हैं कि रोजर विलियम्स अभी भी जीवित हैं। वह और जॉर्ज फॉक्स एक दूसरे के साथ एक बैठक की व्यवस्था करने की कोशिश करते हैं।

अब, यह एक बहुत ही दिलचस्प बैठक रही होगी क्योंकि रोजर विलियम्स केकर्स को तुच्छ समझते थे। उन्हें ये लोग बिल्कुल पसंद नहीं थे। उन्हें लगता था कि वे वाकई अस्वस्थ लोग हैं और निश्चित रूप से धार्मिक रूप से अस्वस्थ हैं।

और इसलिए, मुझे लगता है कि शायद, मुझे नहीं पता, लेकिन शायद वह वास्तव में जॉर्ज फॉक्स से मिलना चाहता था, जॉर्ज को ठीक करना चाहता था, भगवान उसका भला करे। तो शायद यह मुलाकात, हालांकि, जिन कारणों के बारे में मुझे नहीं पता, वह कभी नहीं हुई। इसलिए, जॉर्ज फॉक्स और रोजर विलियम्स एक ही समय पर वहां थे, लेकिन वे वास्तव में कभी एक-दूसरे से नहीं मिले, हालांकि यह जानना दिलचस्प होता कि अगर वे एक-दूसरे से मिलते तो वे एक-दूसरे से क्या कहते।

तो, ठीक है। अब, केकर, रोड आइलैंड, एक बहुत मजबूत केकर गढ़ के रूप में जाना जाता है। तो मैं उस समय से लगभग पाँच पीढ़ियों को तेजी से आगे बढ़ाता हूँ, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, जॉर्ज फॉक्स, रोजर विलियम्स के समय के लिए।

मैं एक ऐसे नाम की ओर तेजी से आगे बढ़ता हूँ जो मेरी सूची में नहीं है। उसका नाम है स्टीफन हॉपकिंस। वह मेरी सूची में नहीं है।

मुझे उसे वहां रखना चाहिए। स्टीफन हॉपकिंस। वह शायद आपकी पाठ्यक्रम सूची में भी नहीं है।

रोड आइलैंड में केकर कितने महत्वपूर्ण थे, स्टीफन हॉपकिंस क्रांतिकारी युद्ध के दौरान रोड आइलैंड के गवर्नर थे और स्वतंत्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर करने वाले थे। तो स्टीफन हॉपकिंस, स्टीफनहॉपकिंस।

तो क्रांतिकारी युद्ध के दौरान गवर्नर और स्वतंत्रता की घोषणा के हस्ताक्षरकर्ता। आप जानते हैं कि मेरी अगली पंक्ति क्या होने वाली है, है न? स्टीफन हॉपकिंस एक बहुत ही गर्वित केकर थे। तो, यह आपको दिखाता है कि कैसे, कुछ पीढ़ियों में, केकर रोड आइलैंड में जीवन में बहुत प्रभावशाली थे।

तो, वह इस बात का उदाहरण है कि केकर्स कितने शक्तिशाली हो गए थे जब आपने इन लोगों को रोड आइलैंड में अपनी इच्छानुसार पूजा करने, अपनी इच्छानुसार शिक्षा देने की स्वतंत्रता दी थी। वे स्टीफन हॉपकिंस के साथ काफी मजबूत हो गए। दरअसल, वे रोड आइलैंड में पांच बार गवर्नर चुने गए थे।

तो यह रोड आइलैंड में एक बहुत ही महत्वपूर्ण केकर व्यक्ति है और आपको दिखाता है कि केकर कितने महत्वपूर्ण हो गए थे। ठीक है। तो यह गिरावट है।

यही वह समय था जब केकर अमेरिका आए थे। केकर के अमेरिका आने के बारे में कोई सवाल? आप पहली नाव पर सवार उन दो महिलाओं में से एक नहीं बनना चाहेंगी क्योंकि उन्हें कभी नाव से उतरने का मौका नहीं मिला, कभी गैंगप्लैंक से नीचे उतरकर फैनुइल हॉल में जाकर लंच करने का मौका नहीं मिला। मेरा मतलब है, उन्हें ऐसा करने की अनुमति ही नहीं थी।

तो, मेरे पास यहाँ कुछ सवाल हैं। आगे बढ़िए। और जहाज़ का नाम क्या था? द स्वेलो।

हाँ। तो, आपको इनमें से कुछ भी याद रखने की ज़रूरत नहीं है। बस एक याद दिलाना है कि केकर्स ने बोस्टन में जगह पाने की कोशिश की थी, और पहले दो को अनुमति नहीं दी गई थी।

लेकिन फिर दूसरे लोग भी आने लगे। केकर शांतिवादी थे। इसलिए, केकर शांतिवादी थे, और क्रांतिकारी युद्ध के दौरान उनकी सेवा इसलिए थी क्योंकि वे सेना में सेवा नहीं करेंगे; उनकी सेवा घायल सैनिकों के घावों पर करुणापूर्वक ध्यान देने की सेवा थी।

तो यह एक ऐसी सेवा थी जो वे प्रदान करते थे, लेकिन वे सेवा नहीं करते थे, वे हथियार नहीं रखते थे। तो, हाँ। हाँ।

ठीक है। यह एक अच्छी बात है क्योंकि मैंने उल्लेख किया है कि जब आप केकर मीटिंग में जाते हैं, और कोई व्यक्ति केकर्स के लिए प्रभु की ओर से एक शब्द बोलने के लिए खड़ा होता है, तो वह पुरुष या महिला हो सकता है क्योंकि हर किसी के पास मसीह का यह आंतरिक प्रकाश है, पुरुष और महिला दोनों, पवित्र आत्मा उस तक पहुँचता है।

और इसलिए, हर किसी को प्रभु के लिए बोलने का अवसर मिलता है, केकर बैठकों में प्रभु के लिए एक शब्द बोलने का। वे समानतावादी थे, केकर महिलाओं और धार्मिक जीवन के मामले में थे। इसलिए, यह प्यूरिटन को परेशान करता था क्योंकि वे वास्तव में ऐनी हचिंसन से परेशान थे, जो केकर नहीं थी, जो एक तरह से उनमें से एक थी।

लेकिन उन्हें यह जानकर बहुत परेशानी हुई कि इन केकर बैठकों में महिलाएँ भी बोल रही थीं। क्या यह संभव हो सकता है? वह लंदन में केकर्स के प्रमुख थे, लेकिन फिर वे ब्रिस्टल चले गए। लेकिन यह थोड़ा पदानुक्रमिक लगता है, है न? मेरे लिए इसे इस तरह से कहना ठीक नहीं है।

वह ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके लिए आपको छोटे-छोटे मीटिंग हाउस बनाने की ज़रूरत है। क्या आपको किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो बताए कि मीटिंग कब होने वाली हैं? और इसलिए, उस तरह से, उस बहुत ही सरल तरीके से, उन्होंने लंदन में केकर्स का उस तरह से ख्याल रखा। लेकिन आप सही कह रहे हैं।

शायद यह शब्द इस्तेमाल करने के लिए सही नहीं है क्योंकि हेड बहुत हद तक पदानुक्रमिक लगता है, और यह केकर्स के लिए बिल्कुल भी सही नहीं होगा। लेकिन मैं हमेशा कहता हूँ, हालाँकि, मैं 10 लोगों को बहुत लंबे समय के लिए एक कमरे में रखता हूँ और आप, मैं आपको अंततः दिखाऊँगा, मैं आपको एक पदानुक्रम दिखाऊँगा। मैं आपको कुछ नेता दिखाऊँगा, और मैं आपको कुछ अनुयायी दिखाऊँगा, और इसी तरह।

इसलिए, मुझे नहीं लगता कि आप कभी भी इससे दूर हो सकते हैं। अगली बात जो हम करना चाहते हैं वह है रोड आइलैंड में बैपटिस्ट के बारे में बात करना और फिर बैपटिस्ट के निरंतर इतिहास के बारे में कुछ शब्द क्योंकि रोड आइलैंड में केवल केकर ही नहीं आए थे, बल्कि बैपटिस्ट भी आए थे। तो अब सवाल यह है कि क्या हमें बैपटिस्ट के बारे में अभी से बात करनी चाहिए या हमें बैपटिस्ट के बारे में बात करने के लिए सोमवार तक इंतजार करना चाहिए? हम बैपटिस्ट के बारे में बात करने के लिए सोमवार तक इंतजार करेंगे।

आपका दिल धन्य हो। आपका दिन शुभ हो। हम आपसे मिलेंगे। आपका सप्ताहांत अच्छा रहे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं जो अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह रोजर विलियम्स और रोड आइलैंड में धार्मिक विविधता पर सत्र 3 है।